अमित शाह ने दिया था सीधे गोली मारने का आदेश

पत्रकार राणा अय्युब की किताब में हुआ खुलासा, और भी कई गंभीर आरोप लगे हैं गुजरात दंगों के दौरान, राणा की किताब 'गुजरात फाइल्स' का दिल्ली के प्रेस क्लब में 16 सितंबर को हिंदी संस्करण का विमोचन तय हुआ।

2002 गुजरात दंगों पर लिखी गयी पत्रकार राणा अय्युब की किताब गुजरात फाइल्स बेहद विवादित और चर्चित रही है। किताब में वीडियो, ऑडियो, स्टिंग और प्रमाणों के जरिए बताया गया है कि 2002 गुजरात दंगा सरकार प्रायोजित था। किताब में तथ्यों के साथ विस्तार से जिम्मेदार पुलिस और खुफिया अधिकारियों के हवाले से साबित किया गया है कि गुजरात दंगों के मुख्य संचालनकर्ता वर्तमान भाजपा अध्यक्ष और गुजरात के तत्कालीन मंत्री अमित शाह थे। पढ़िए, गुजरात फाइल्स के अध्याय 4 का एक महत्वपूर्ण अंश, जिसमें गुजरात के तत्कालीन पुलिस अधिकारी और आइपीएस राजन प्रियदर्शी सीधे—सीधे बता रहे हैं कि कैसे अमित शाह ने सीधे—सीधे गोली मारने का आदेश दिया था।

(आईपीएस अफसर राजन प्रियदर्शी से राणा अय्युब की बातचीत का अंश)

.आपके मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी तो यहां गुजरात में बहुत लोकप्रिय हैं?

– हां, वह सबको मूर्ख बनाते हैं और लोग मूर्ख बनते हैं।

. ऐसे हाल में तो, अतिरिक्त डीजी होने के नाते, आपके लिए उनके साथ काम करना कठिन होता होगा?

–उनकी कभी हिम्मत नहीं हुई कि वे मुझे कोई भी गैरकानूनी काम करने के लिए मजबूर कर सकें।

.यहां काफी अराजकता चलती है न? शायद ही कोई ऐसा अफसर हो जो खरा हो?

–बहुत थोड़े से हैं। यह व्यक्ति नरेंद्र मोदी (पूरे राज्य में) मुसलमानों के कत्ल के लिए जिम्मेदार हैं।

.अच्छा! मैंने सुना है कि पुलिस अधिकारी भी सरकार की ही नीति पर चलते रहे हैं?

–हां, सारे के सारे, जैसे यह पीसी पांडे, सबकुछ उनकी मौजूदगी में हुआ।

.ज्यादातर अफसरों का कहना है कि उन्हें गलत तरीके से फंसाया गया है?

–क्या गलत तरीके से! उन्होंने किया है तभी तो वे अब सलाखों के पीछे जा रहे हैं। उन्होंने एक जवान लड़की को मुठभेड़ में मार डाला।

.वाकई?

–हां, उन्होंने उसे लश्कर आतंकी कहा था। वह मुंबई से थी। कहानी यह गढ़ दी गई कि वह एक आतंकवादी थी, जो मोदी का कत्ल करने के लिए गुजरात आई थी।

. और यह झूठ था?

–हां, सरासर झूठ है।

. और, जब से मैं यहां आयी हूं, सभी सोहराबुद्दीन मुठभेड़ के बारे में बात कर रहे हैं?

–पूरा देश उस मुठभेड़ की बात कर रहा है। मंत्री के इशारे पर उन्होंने उस सोहराबुद्दीन और तुलसी प्रजापति को ठिकाने लगा दिया। यह मंत्री अमित शाह, कभी मानवाधिकारों में यकीन नहीं करते थे। वह हमसे कहते थे कि मैं इन मानवाधिकार आयोग में यकीन नहीं करता हूं। और अब देखो, अदालतों ने उन्हें जमानत भी दे दी है।

. तो, आपने कभी उनके अधीन काम नहीं किया?

–किया था, जब मैं एटीएस प्रमुख था। उन्होंने वंजारा का ट्रांसफर किया और मुझे ले आए। और मैं तो वो व्यक्ति हूं जो मानवाधिकारों में यकीन करता हूं। तो शाह ने मुझे अपने बंगले पर बुलाया। मैं तो तब तक कभी किसी के बंगले पर गया नहीं था। न ही किसी के घर या दफ्तर पर। इसलिए मैंने उन्हें कह दिया कि, सर मैंने आपका बंगला देखा नहीं है। वह हैरान रह गए और पूछा, तुमने मेरा बंगला क्यों नहीं देखा है? आगे वह बोले, चलो ठीक है। मैं तुम्हारे लिए अपनी निजी गाड़ी भेज दूंगा, उसमें आ जाना। इस पर मैंने कहा, ठीक है, आप मेरे लिए अपनी गाड़ी भेज दीजिएगा। तो जब मैं पहुंचा तो उन्होंने कहा, अच्छा आपने एक बंदे को अरेस्ट किया है ना, जो अभी आया है एटीएस में, उसको मार डालना है।

मैंने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं की। और, उन्होंने फिर कहा, 'देखो मार डालो, ऐसे आदमी को जीने का कोई हक नहीं है।'

बुलेट ट्रेन एक प्रेम कथा

-रवींद्र पतवाल

आज से ठीक 3 साल पहले भारत में बुलक कार्ट की जगह बुलेट ट्रेन लाने की हवा उड़ाई गई थी। मुंबई से अहमदाबाद. अब उसका शिलान्यास का समय आ गया है। इसके समर्थन में कई घोंचू अर्थशास्त्री रोज अखबार काले कर रहे हैं सम्पादकीय के. रोज नए नए आंकड़े किसी गुप्त विश्लेष्ण से ला रहे हैं. सफर जल्द तय होगा, ग्रोथ बढ़ेगी, फ्री में मिल रहा है, 15 साल बाद धीरे धीरे जापान को चुका देंगे आदि आदि।

ऐसे घोंचुओं और तेल मालिश करने वालों से कुछ सवाल...

बुलेट ट्रेन पर 1.20 लाख करोड़ वो भी 508 किलोमीटर के लिए.(आंकड़े 3 साल पहले याद थे, शायद यही थे) के लिए यह खर्च तुम्हे कुछ नहीं लग रहा।

इस देश में अब हर रोज 2-3 ट्रेन हादसे हो रहे हैं। ट्रैक मरम्मत करने को पैसे नहीं हैं। ड्राइवर गाड़ी रोक देता है तो रेलवे के अफसर अपनी नौकरी बचाने के लिए और ऊपर की झाड़ से बचने के लिए खुद लिखकर ड्राइवर को देते हैं कि 5 किलोमीटर की स्पीड से गाडी चलाओ, जिम्मेदार मैं हूँ। फिर ड्राइवर गाडी चला देता है तो तीसरी ट्रेन राजधानी पटरी से उतर जाती है।

3 साल पहले आंकड़े आए थे कि 50 करोड़ में एक किलोमीटर मेट्रो के लिए ट्रैक बन जाता है। मतलब 2400 किलोमीटर मेट्रो बन सकती है। दिल्ली में अभी भी 250 किलोमीटर बनी होगी। लखनऊ, जयपुर, आगरा, इंदौर, रायपुर, झाँसी, पटना, सूरत, उदयपुर, जालंधर जैसे शहरों में अगर 10 किलोमीटर भी मेट्रो बन जाय अगले 3 साल में तो ऐसे 240 शहरों का कल्याण हो जाएगा। पूरे देश में जो धुआं धुआं सा है, वो खत्म होगा.

लोग कैंसर जैसी बीमारी से बचेंगे, उसमे जो लाखो करोड़ खर्च हो रहे हैं और जन धन की हानि हो रही है, कमी आएगी। पर ये सब नहीं होगा. क्योंकि पेट्रोल जितना बिकेगा उतना सरकार के पास ऐश करने के लिए टैक्स मिलेगा।

अम्बानी जी का पेट्रोल पंप ही तो असली खेल है। फिर बड़े-बड़े कार बेचने वालों का क्या होगा? विदेशी कम्पनियों का क्या होगा?

यह सब देखते हुए, हमें बुलेट ट्रेन ही भाती है भाया, जिसका किराया हवाई जहाज से कम नहीं होगा. और सफर भी 4 घंटे से कम क्या होगा। जहाज में बोरियत बहुत होती है, घंटे भर में सफर होता है, पर जापान वाला चार्म आना मांगता।

और फिर विश्व गुरु बनाने के लिए एक ठो बुलेट ट्रेन मांगता। चाहे शिंजो आबे को अहमदाबाद के झुग्गी झोपड़ी न दिखे के लिए हरे हरे परदे ही क्यों न लगाने पड़े।

बाजीगर बाजीगर का खेल खेलो, शिंजो आबे तो अनपढ़ है. उसे क्या पता भारत की असली हकीकत। वो अखबार और आर्थिक खबरें तो क्या पढता होगा?

माओवादियों ने की पत्रकार लंकेश हत्याकांड की निंदा

माओवादी नेता ने कहा पत्रकार लंकेश हत्याकांड में माओवादियों का नाम घसीट हिंदूवादी कर रहे हैं बरगलाने की कोशिश, माओवादी इस हत्याकांड के खिलाफ अपने क्षेत्रों में कर रहे विरोध

जनज्वार, दिल्ली। मीडिया में पत्र जारी कर भूमिगत व प्रतिबंधित वामपंथी पार्टी सीपीआई 'माओवादी' के प्रवक्ता और केंद्रीय समिति सदस्य अभय ने कहा है, 'हमारी पार्टी एक वामपंथी, प्रगतिशील और जनवादी पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या का पुरजोर शब्दों में निंदा करती है और मानती है कि हत्या के पीछे भाजपा समर्थित हिंदूवादी संगठनों का हाथ है।'

माओवादी पार्टी के प्रवक्ता का यह बयान महत्वपूर्ण है क्योंकि लंकेश की हत्या के आरोपियों में इस संगठन का नाम भी चर्चा में था। हालांकि प्रवक्ता अभय ने अपने जारी बयान में कहा है कि पत्रकार की हत्या की न सिर्फ निंदा करते हैं, बल्कि हत्या में शामिल हिंदूवादी और फासीवादी ताकतों के खिलाफ लगातार अपने प्रभाव क्षेत्रों में प्रदर्शन भी आयोजित कर रहे हैं।

गौरतलब है कि गौरी लंकेश की हत्या के बाद से गौरी के भाई इंद्रजीज के हवाले से यह खबर आई थी कि उनकी हत्या का संदेह माओवादियों—नक्सलियों पर भी हो सकता है। गौरी लंकेश के भाई के संदेह की खबर को मीडिया में प्राथमिकता से दिखाई गई थी। यह आरोप इंद्रजीत ने इसलिए लगाया था कि गौरी लंकेश ने कई माओवादियों को मुख्यधारा में शामिल किया था, जिससे माओवादी लंकेश से खफा थे और वह रंजीश में बदले की कार्यवाही कर सकते थे।

यारबाज मोदी के नये-नये यार

कहते हैं कि किसी को पहचानना हो तो उसकी संगत को देखो। वैसे कहावतें और भी हैं कि चोर-चोर मौसेरे भाई। या एक ही रंग के पक्षी एक साथ उड़ते हैं इत्यादि।

अभी पिछले महीने मोदी ने अपना एक और यार बनाया। यह शख्स और कोई नहीं, इजरायल का बेंजामिन नेतन्याहू है। अरब दुनिया में इस शख्स की शोहरत अपरम्पार है। बाकी दुनिया भी उससे कुछ कम वाकिफ़ नहीं है।

मोदी के इजरायल यात्रा के दौरान इस शख्स के साथ काफ़ी समय गुजारा। वैसे भी पत्नी को वियाबान में छोड़ देने वाले मोदी के पास फ़ुर्सत के क्षणों में घूमने के लिये कोई साथ था नहीं। जिन जगहों पर कोई अन्य विदेशी प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति अपनी पत्नी या पति के साथ घूमता नज़र आ रहा होता या होती वहां मोदी नेतन्याहू के साथ घूमते नज़र आ रहे थे। मोदी के प्रत्युत्तर में नेतन्याहू ने भी मोदी को अपना नया जिगरी यार करार दिया।

कुछ दिन बाद यह उज़ागर भी हो गया कि क्यों? अभी मोदी इजरायल से लौटे ही थे कि उनके नये जिगरी यार पूर्वी यूरोप के चार देशों की यात्रा पर रवाना हो गये। वहां उनके दिल के बात गलती से माइक चालू रहने के कारण प्रसारित हो गयी। नेतन्याहू ने बताया कि मोदी ने उनसे कहा था कि यदि मुझे ताज़ा पानी चाहिए तो कहां से मिलेगा? क्या रामल्ला से? बात स्पष्ट थी। मोदी को रामल्ला यानी फिलिस्तीनी से कुछ मिलने वाला नहीं है। इसलिए उन्हें उसकी चिंता नहीं। उन्हें बस फिलस्तीन को हड़प लेने वाले इजरायल से मतलब रखना है।

मजे की बात यह है कि ताज़े पानी का एक बड़ा स्रोत रामल्ला में ही है और फिलस्तीन के कुछ हिस्से को इजरायल ने इसलिये हड़पा था कि वहां ताज़े पानी के स्रोत थे। जहां तक भारत की बात है, यह भी मजेदार बात है कि इसका प्रधानमंत्री ताज़े पानी की खोज में इजरायल गया। भारत ताज़े पानी से लबालब था। पर इसके ज़मीनी पानी का दुरूपयोग कर या उसे प्रदूषित कर तथा अपनी नदियों को कूड़े-कचड़े से पाटकर या तालाबों-झीलों को सुखाकर इस देश का प्रधानमंत्री एक ऐसे देश में ताजे पानी की तलाश करता घूम रहा है जो स्वयं ही सूखा है और जो पड़ोसियों के पानी को हड़पकर काम चला रहा है।

असल में मोदी इजरायल में पानी नहीं तलाश रहे थे। वे पानी के लिये बेंजामिन नेतन्याहू को अपना जिगरी यार नहीं घोषित कर रहे थे। असल में मोदी ओर नेतन्याहू पैदाइशी जिगरी यार हैं। असल में उन्हें खुलकर बाहर आना था। यह खुलकर बाहर आने का मौसम है और जब इतने सारे लोग खुलकर बाहर आ रहे हों तो संघी मोदी ही पीछे क्यों रहें।

संघियों ने 1948 से इजरायल का पक्ष लिया है। उन्होंने तभी से अमेरिकी साम्राज्यवादियों से मधुर रिश्तों की वकालत की थी। अब इतने समय बाद जब संघी भारतीय राजनीति में हावी हों तो वे अपने पुराने प्यार का क्यों न खुलकर इजहार करें। वे क्यों अब भी शर्माएं। अब उन्हें बाहर-भीतर किसी का डर नहीं। कोई लोक-लिहाज नहीं। इसीलिए मोदी ने पहले बराक ओबामा को अपना यार घोषित किया, फ़िर डोनाल्ड ट्रम्प को और अब बेंजामिन नेतन्याहू को भी।

बात न तो ताजे पानी की है, न हथियारों की, न ही पैलेटगन की। बात उस तकनीक की भी नहीं है जिससे इजरायली शासक फिलस्तीनी विद्रोहियों का दमन करते हैं। बात इन इन सबसे परे बस इजरायल के होने की है। उस इजरायल की जो अस्तित्व में तो आया दुनियाभर के सभी इंसाफ पसंद लोगों की सहानुभूति पाकर जो जल्दी ही एक भयंकर आततायी में बदल गया। महज कुछ सालों में इजरायल के बशिंदे एक उत्पीड़ित कौम से उत्पीड़क कौम में तब्दील हो गये। महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके उत्पीड़न का वे शिकार हुए जिन्होंने कभी इजरायली बाशिंदों का उत्पीड़न नहीं किया था। जिन्होंने यह किया था अब वे इस नये उत्पीड़न के समर्थक बन गये।

ये उत्पीड़क लोग धार्मिक तौर पर मुसलमान थे और यहीं से संघियों की इजरायल से सहज एकता बन गयी। वे बिना किसी हिचक के इस उत्पीड़न के घोर समर्थक बन गये। इजरायल एक तरह से उनके लिए मॉडल बन गया। इनका बस चलता तो पाकिस्तान और बांग्लादेश पर कब्जा कर लेंते और देश के सारे मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक बना देते।

मोदी सरकार बेंजामिन नेतन्याहू से सहज यारी महसूस करती है। यदि उन्होंने अपनी यारी जगजाहिर करने में तीन साल लगा दिये तो इसीलिये कि हर किसी को खुलकर सामने आने में समय लगता है। अब अंतत: मोदी ने वह लक्ष्मण रेखा पार कर ली है।

मोदी ट्रंप और नेतन्याहू जैसे यारों की यह यारी दुनिया भर की मज़दूर-मेहनतकश जनता के लिये ज़रा भी अच्छी खबर नहीं है, स्वयं इजरायल की भी मज़दूर मेहनतकश जनता के लिये नहीं

नागरिक